


# राष्ट्रीय प्लैटिनम जुबली समारोह

**27-31 अक्टूबर 2018**

**पटना (बिहार)**





आज़ादी की जद-ओ-जहद ... क़ौमी तहज़ीब की बाज़याबी की लड़ाई भी थी। इप्टा ने यह लड़ाई अपने गानों, नाचों, नाटकों के हथियारों से लड़ी भी थी। ... आज जब फ़िरकापरस्ती का फ़रोग हमारी आज़ादी जम्हूरियत और सेक्यूलरइज़्म के लिए ज़बरदस्त ख़तरा बन गया है, हम उसका मुक़ाबला करने की जिम्मेदारी सिर्फ राजनीति पर नहीं छोड़ सकते ... इसलिए आज मुल्क जितने ख़तरों में घिरा हुआ है उनका मुक़ाबला करने और उन्हें शिकस्त देने के लिए इप्टा को ज़्यादा मज़बूत और ज़्यादा सरगर्म करना ज़रूरी है।

*- इप्टा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष मशहूर शायर कैफ़ी आज़मी*

दोस्तो,
भारतीय जन नाट्य संघ (इप्टा) 75 साल पूरे करने जा रहा है। इप्टा आधुनिक भारत का सबसे बड़ा संगठित सांस्कृतिक आंदोलन है। यही नहीं, भक्ति आंदोलन के बाद यह सबसे बड़ा जन सांस्कृतिक आंदोलन भी है।

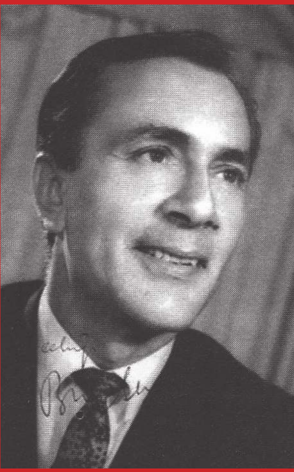
इसके दायरे का अंदाज़ा महज़ इसकी इकाइयों की ताक़त से नहीं लगाया जा सकता है। क्यों? क्योंकि यह महज़ एक और सांस्कृतिक संगठन नहीं है बल्कि अवामी संस्कृति का प्लेटफार्म है। उनके दुःख-सुख को आवाज़ देने वाला संगठन है। मेहनतकश अवाम की जद्दोजेहद के साथ सुर-ताल मिलाने वाला मंच है। यह मोहब्बत का पैरोकार है। संघर्ष की आवाज़ है।

यह बेख़ौफ़ आज़ादी की संस्कृति में यक़ीन रखता है। हर तरह की गैरबराबरियों के ख़िलाफ़ नई संस्कृति की इबारत लिखने की कोशिश में जुटा है।
ज़ाहिर है, पचहत्तर साल के इस संगठन की पैदाइश देश की आज़ादी से पहले ही हुई होगी। मगर संस्कृति के नाम पर इस संगठन ने मुल्क के सामने खड़ी चुनौतियों से मुँह नहीं फेरा। संस्कृति की आड़ में राजनीतिक-सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक सवालों से पर्दादारी नहीं की। बल्कि उसका जन्म ही दुःखों से बदहाल आज़ादी की चाह के लिए तड़पती जनता की आवाज़ बनने के लिए हुआ।
इप्टा ने अपने संस्कृतिकर्म के ज़रिए शुरू से ही यह साफ़ कर दिया था कि जनता की तकलीफ़ों से अलग-थलग हटकर जनता की कला-संस्कृति का विकास नहीं हो सकता है। उसने एलान किया- कला की असली नायक तो जनता ही है!

इसलिए उसके मंच से द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान का फ़ासीवाद, देश की ग़ुलामी, बंगाल का भीषण अकाल, ज़मींदारों का शोषण, साम्प्रदायिक हिंसा, गरीबी, बेरोज़गारी, स्त्री समानता, सामाजिक-जातीय-धार्मिक भेदभाव के मुद्दे नाटकों, गीतों, संगीतों, नृत्य नाटिकाओं, फिल्मों के ज़रिए दुनिया के सामने आए।

ज़ाहिर है, 75 साल का सफ़र किसी भी ऐसे संगठन के लिए आसान नहीं होगा, जो उन संस्कृतियों से टकराती रहती है, जिनकी नींव ग़ैरबराबरी, शोषण, नफ़रत, हिंसा और असंवैधानिक मूल्यों पर टिकी है। इप्टा का सफ़र भी काफ़ी उथल-पुथल वाला रहा है। मगर जिन्हें आज़ादी से प्यार है और देश से प्रेम, वे कहाँ झुकते हैं। इप्टा ज़िंदाबाद है। बेहतर दुनिया के ख़्वाब की इप्टा की सांस्कृतिक मुहिम जारी है।
70 साल बाद भी हमारे मुल्क के मेहनतकश, गाँव और शहरों के लोग, नौजवान लड़के-लड़कियाँ बेख़ौफ़ आज़ादी, बेहतर दुनिया बनाने की चाह,

## इप्टा की नायक जनता है



"भारतीय जन नाट्य संघ न तो किसी राजनीतिक पार्टी से सम्बद्ध है, न किसी गुट से। यह (इप्टा) एक ऐसा संघ है, जहाँ सभी राजनीतिक दलों और गैर राजनीतिक लोगों का स्वागत है। इस संघ का सदस्य होने की एकमात्र शर्त है–देशभक्ति, अपनी जन संस्कृति पर गर्व!... मैं इप्टा का बहुत कर्ज़दार हूँ। जो शोहरत मुझे मिली वह इप्टा में काम करने की वजह से ही मिली।... इप्टा में काम करने की वजह से ही मैं *दो बीघा जमीन* फिल्म में शंभू का किरदार निभाया।... "

*– बलराज साहनी*
*प्रख्यात अभिनेता*




गैरबराबरियों से परे समाज बनाने का ख़्वाब आँखों में सँजोए हैं। इप्टा इस ख़्वाब की सांस्कृतिक आवाज़ है। पूरे देश में इप्टा की इकाइयाँ आज भी अपने नाटकों, गीतों, संगीतों के ज़रिए इस आवाज़ को बुलंद करने की कोशिश में लगी हैं। यही नहीं, इप्टा संगठन से परे इप्टा का विचार कई रूपों में कई संगठनों, शख़्सीयतों में ज़िंदा है।

**अपनी विरासत को याद करने और नए संघर्ष का न्योता देने के लिए हम 27 से 31 अक्टूबर 2018 के दौरान बिहार की राजधानी क़ैफ़ी आज़मी महानगर, पटना में एक बार फिर इकट्ठा हो रहे हैं। यह इप्टा का राष्ट्रीय प्लैटिनम जुबली समारोह होगा।**

हमारी कोशिश है कि न सिर्फ़ इप्टा के सदस्य बल्कि इप्टा के हमख़्याल और उस विरासत से जुड़े सभी संगठन और व्यक्ति इस दौरान पटना में इकट्ठा हों। मगर यह समारोह सिर्फ़ जश्न नहीं होगा। हम देश के प्रति अपने प्यार से मुँह नहीं मोड़ सकते हैं। इसलिए देश के सामने दरपेश सांस्कृतिक चुनौतियों से भी मुँह नहीं चुरा सकते हैं। इसलिए हम सब इस दौरान खुलकर बातचीत करेंगे। इन सबके लिए हम सबकी एकजुट सहयोग की ज़रूरत है। सहयोग का रूप कुछ भी हो सकता है। कई बार, सिर्फ़ हमारी अच्छी नीयत ही बड़े से बड़े काम आसानी से करने में मददगार होती है। हम इसकी क़ामयाबी की नीयत तो कर ही सकते हैं।

तो आइए दोस्तो,
अगर हम नफ़रत, हिंसा, झूठ, गैरबराबरियों से आज़ाद संस्कृति में यक़ीन रखते हैं... अगर हम स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व की संविधान की संस्कृति में यक़ीन रखते हैं... अगर हम बेख़ौफ़ आज़ादी में यक़ीन रखते हैं... अगर हम जिंदा होने और ज़िंदगी की जीत की संस्कृति में यक़ीन रखते हैं... अगर हम त्याग, प्रेम, सहिष्णुता की संस्कृति के लिए कुछ भी क़ुर्बान करने को तैयार हैं तो आइए इस जन सांस्कृतिक आंदोलन को आगे बढ़ाने में हम मिलकर अपना योगदान दें ... नीयत करें...

*यही वक़्त की आवाज़ है...*
*यही ज़िंदगी का राज़ है...*
*हम सब मिल के चलें...*



*निवेदक*
इप्टा–बिहार राज्य परिषद
इप्टा राष्ट्रीय प्लैटिनम जुबली समारोह आयोजन समिति

**People's Theatre Stars The People**



बतौर सांस्कृतिक कार्यकर्ता आज हमारी भूमिका क्या है? सबसे पहले हमें साबित करना होगा कि हम आम जन का ही हिस्सा हैं। हमारी पूरी ताकत, कौशल, रचनात्मकता और सारी पहल जनता के लिए समर्पित होनी चाहिए। हम प्रतिरोध की आवाज बनना चाहते हैं। बदलाव का ज़रिया बनना चाहते हैं। बतौर रचनात्मक संस्कृतिकर्मी हमें अपने कला के ज़रिए लोगों की संवेदनाओं और चेतना को और धारदार बनाना चाहिए।

*– जितेन्द्र रघुवंशी*
*पूर्व राष्ट्रीय महासचिव*



*1944: इप्टा के सेंट्रल स्कवॉयड ने देश भर में आज़ादी की अलख जगाने और बंगाल के अकाल पीड़ितों के लिए मदद इकट्ठा करने का काम किया। इस तस्वीर में नेमीचंद जैन, शांता गांधी, उषा दत्ता, भूपति नंदी हैं।*

# आइए इप्टा के सफ़र पर चलते हैं...

क्या हमें पता है...
सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा, हम बुलबुले हैं इसकी यह गुलिस्ताँ हमारा – इक़बाल के इस नज़्म की जो धुन हम गाते हैं, वह किस संगठन की देन है? जी, वह इस मुल्क के सबसे बड़े आधुनिक जन सांस्कृतिक आंदोलन की देन है। इसे तैयार किया था, मशहूर सितारवादक रविशंकर ने। यह आंदोलन कोई और नहीं, भारतीय जननाट्य संघ (इप्टा) है।

भारतीय जननाट्य संघ (इप्टा) संगठन मात्र नहीं है। यह आधुनिक भारत का पहला संगठित सांस्कृतिक आन्दोलन है। यह आन्दोलन आज भी चल रहा है, और कई रूपों में, कई संगठनों की शक्ल में देश के विभिन्न हिस्सों में इसे देखा जा सकता है।

इसीलिए मशहूर फिल्मकार बासु भट्टाचार्य कहते हैं कि हममें से कई लोग सीधे तौर पर इप्टा आंदोलन में सक्रिय नहीं थे। लेकिन क्या वाक़ई में ऐसा था? हम सब उसी तरह के काम में जुटे हैं, जिसका मक़सद इप्टा आंदोलन ने तय किया था... इप्टा का नज़रिया ज़िंदाबाद!

तो इप्टा के नाम से न सही मगर इप्टा के नज़रिए से इस मुल्क में सांस्कृतिक लहर शुरू हुई। वह लहर आज भी लोगों के बीच ज़िंदा है। यानी इप्टा महज़ इतिहास नहीं है। इप्टा विरासत है।

हर वह शख़्स जो देशप्रेम और जन संस्कृति में यक़ीन रखता था, वह इससे जुड़ा। आज़ादी की लड़ाई, बंगाल में पड़ा ज़बरदस्त अकाल, द्वितीय विश्वयुद्ध की वजह से पूरी दुनिया पर जंग का मँडराता ख़तरा– इप्टा इसी पसमंज़र में पैदा हुआ।



मैंने सिनेमा में आने के बाद भी रंगमंच को जीवन से अलग नहीं किया। इप्टा में शामिल होने में मुझे काफ़ी मेहनत करनी पड़ी।... इप्टा सिर्फ़ रंगमंच नहीं, बल्कि एक विचार है। ऐसा विचार जो कला के माध्यम से दुनिया को बदलना चाहती है। इसलिए ज़रूरी है कि दुनिया की महान कलाओं के साथ खड़ा रहने के लिए हम जानें दुनिया में क्या कुछ बदल रहा है। मैंने अब्बा से एक बात जानी, वे कहा करते थे कि तुम जो काम कर रही हो उस पर तुम्हें यक़ीन होना चाहिए। ...

*– शबाना आज़मी*
*मशहूर कलाकार*



*1944: बंगाल के अकाल को केन्द्र में रख कर इप्टा ने नबान्न नाटक तैयार किया। नाटककार थे- बिजन भट्टाचार्य और निर्देशक बिजन भट्टाचार्य और शंभू मित्र थे। इस नाटक ने भारतीय रंगमंच की दिशा बदल दी।*

इप्टा के नौजवान कलाकारों ने अपनी कला के ज़रिए आज़ादी की लड़ाई में हिस्सा लिया। भूख और जंग के ख़िलाफ़ पूरे मुल्क में जागृति फ़ैलाई।

इप्टा का बहुत नज़दीकी रिश्ता साहित्यकारों, मज़दूरों, किसानों, विद्यार्थियों के संगठन से था। इसकी टीम ये सभी थे।

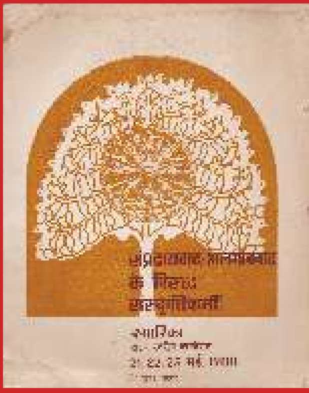
इंडियन पीपुल्स थिएटर (इप्टा) जैसा नाम महान वैज्ञानिक डॉ. होमी जहाँगीर भाभा ने सुझाया।

इप्टा के साथ ढेर सारे चित्रकार भी जुटे। मशहूर चित्रकार चित्त प्रसाद ने इप्टा का निशान 'कॉल ऑफ द ड्रम्स' तैयार किया।

पहला राष्ट्रीय सम्मेलन, 25 मई 1943 को बंबई में हुआ। पहले अध्यक्ष एनएम जोशी थे और महासचिव श्रीलंकाई मूल की अनिल डी सिल्वा थीं।

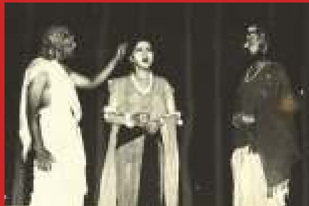
इप्टा ने अपने जन्म से ही साफ कर दिया था कि कला सिर्फ कला के लिए नहीं बल्कि जीवन के लिए हो। बंगाल का भीषण अकाल हो या फिर आजादी की लड़ाई या किसानों-मजदूरों का संघर्ष, इप्टा ने हमेशा आगे बढ़कर अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह किया।

इप्टा सिर्फ कलाकारों का मंच नहीं बना बल्कि इसमें वे सभी लोग शामिल हुए जो जन संस्कृति के पक्षधर थे और जन आन्दोलन से जुड़े थे। इस आन्दोलन में केवल लेखक, कवि, चित्रकार, रंगकर्मी ही नहीं राजनीतिक, वैज्ञानिक, क्रांतिकारी, सामाजिक कार्यकर्ता, मजदूर-किसान, विद्यार्थी इसके हिस्सा बने। इसके कलाकारों ने अंग्रेज़ों का दमन सहा, आजाद भारत में अपनी सरकार की लाठियाँ खाई, जेल गये, प्रतिबंध का सामना किया लेकिन जन संस्कृति की लौ जलाये रखी।













*1988: जब देश में अलगाववाद-सम्प्रदायवाद की नफ़रती संस्कृति अपने पाँव पसारने की कोशिश में लगी थी तब इप्टा ने इससे मुक़ाबला करने के लिए देश भर से संस्कृतिकर्मियों को पटना में एक मंच पर इकट्ठा किया। इस मौके पर ऐतिहासिक गांधी मैदान में आयोजित आम सभा को सम्बोधित करने वालों में गोविंद विद्यार्थी, क़ैफ़ी आज़मी, एके हंगल, ग़ुलाम रब्बानी ताबाँ, एमके रैना, दीना पाठक शामिल थे।*

# इप्टा के दिग्गज, दिग्गजों का इप्टा

हिरेन मुखर्जी, मनोरंजन भट्टाचार्य, पृथ्वीराज कपूर, उदय शंकर, पंडित रविशंकर, मुल्कराज आनंद, बलराज साहनी, हेमंत कुमार, मन्ना डे, कृश्नचंदर, साहिर लुधयानवी, पीसी जोशी, तोपिल भाषी, तेरा सिंह चन्न, जसवंत ठक्कर, गजानन वर्मा, खेमचंद नागर, मजरूह सुल्तानपुरी, नरेन्द्र शर्मा, भीष्म साहनी, एके हंगल, ख़्वाजा अहमद अब्बास, नर्गिस, अली सरदार जाफ़री, विमल रॉय, बिजन भट्टाचार्य, सलिल चौधरी, संजीव कुमार, मख़्दमू मोहिउद्दीन, भूपेन हजारिका, ऋत्विक घटक, अनिल विश्वास, मामा वरेरकर, शंभू मित्रा, उत्पल दत्त, हेमांगू विश्वास, डॉ.रशीद जहाँ, गोविंद विद्यार्थी, राजेन्द्र रघुवंशी, दीना पाठक, इस्मत चुग़ताई, कैफ़ी आज़मी, तृप्ति मित्रा, मनोरंजन भट्टाचार्य, ज़ोहरा सहगल, संजीव कुमार, राजेन्द्र सिंह, कनु घोष, रूमा गुहा ठाकुरता, रज़िया सज्जाद ज़हीर, विष्णु प्रभाकर, अमर शेख़, अन्नाभाऊ साठे, हबीब तनवीर, नेमिचन्द्र जैन, प्रेम धवन, शंकर शैलेन्द्र, दशरथ लाल, अमृतलाल नागर, दुर्गा खोटे, विजेन्द्र अग्निहोत्री, रेखा जैन, आबिद रिज़वी, सफ़दर हाशमी, जितेन्द्र रघुवंशी, जुगल किशोर, रवि नागर और एमएस सथ्यू, शमिक बंदोपाध्याय, जावेद सिद्दीकी, शबाना आज़मी, परवेज़ अख़्तर, अंजन श्रीवास्तव, राकेश बेदी, अचला नागर, राकेश, हिमांशु राय, अखिलेन्द्र मिश्र, विनीत, सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ, अरुण पाण्डेय, वेदा राकेश, जावेद अख़्तर, के. प्रताप रेड्डी, संजीवन सिंह, वसंत काशीकर, असद मिनहाज़, तनवीर अख़्तर, नूर ज़हीर, राकेश बेदी, रमेश तलवार, सीताराम सिंह, ऊषा आठले, राजेश श्रीवास्तव, अजय आठले, मनीष कुमार, फ़ीरोज़ अशरफ़ खाँ, शैलेन्द्र, कुलदीप सिंह, अमिताभ चक्रवर्ती, अमिताभ पाण्डेय, टीवी बालन, नल्लोरी वेंकटेशवरल्लू, नारा सिंह, पी. खोगेन्द्र सिंह, प्रमोद भुइयाँ, संजय गुप्ता, बलकार सिंधु, एन. बालाचन्द्रन, लक्ष्मी नारायणा जैसे अनगिनत संस्कृतिकर्मी इप्टा आन्दोलन के साथी बने और आज भी सक्रिय हैं।





*नाटक दूर देश की कथा पटना इप्टा की यादगार प्रस्तुतियों में से एक है। यह नाटक पूरी तरह पटना इप्टा की रचनात्मक ताक़त की देन थी। इसकी प्रस्तुतियाँ बड़े ऑडिटोरियम में ही नहीं, खुले मैदानों तक में हुई।*

...
इस मंच से हम भारत के सभी संस्कृति प्रेमियों, लेखकों, कवियों नाटककारों, अभिनेताओं, अभिनेत्रियों, गीतकारों, नर्तकों, से अपील करते हैं कि वे अपने छोटे-छोटे आपसी मतभेद भुलाकर मातृभूमि की ख़ातिर एक हो जाएँ। ... अगर हमने देश की सृजनात्मक रचनात्मक ताक़तों को एक करने का सुनहरा मौक़ा छोड़कर देश को पतन और हिंसा, विकृति और अश्लीलता, अंधकार के रास्ते पर बढ़ने दिया तो इतिहास हमें कभी माफ़ नहीं करेगा।

*– सलील चौधरी*
*23 दिसम्बर 1994*
*पटना*



आधुनिक भारतीय रंगमंच का इतिहास इप्टा का इतिहास है। बिजन भट्टाचार्य का 'नबान्न', उत्पल दत्त का 'कल्लोल', ख्वाजा अहमद अब्बास का 'यह खून किसका है?' या फिर बलराज साहनी की 'जुबैदा' और एसएम घोषाल का 'पीर अली'- इन सभी नाटकों ने रंगमंच में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया। इसकी मिसाल आज के कई बड़े नाटककारों के काम में देखी जा सकती है।

इप्टा के मंच से पंडित रविशंकर, सलिल चौधरी, प्रेम धवन, अमर शेख, अन्ना भाऊ साठे, भूपेन हजारिका, हेमांगू विश्वास ने अलग-अलग भाषाओं में कई गीतों को जो सुर व शैली दी, वह आज भी मील के पत्थर हैं। इन मशहूर गीतों में शामिल हैं-सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्ताँ हमारा, जंग है जंगे आजादी, भूखा है बंगाल, हम धरती के लाल, मिल के चलो, तू ज़िंदा है तो ज़िंदगी की जीत में यक़ीन कर, दमादम मस्त कलंदर, आज़ादी ही आज़ादी... आदि।

इप्टा की दो फिल्मों- 'धरती के लाल' और 'दो बीघा जमीन' ने फिल्म निर्माण के नजरिये में बुनियादी बदलाव पैदा किया। इस बदलाव का असर ऋत्विक घटक, गुरुदत्त, विमल रॉय, सत्यजीत रे, श्याम बेनेगल, बासु भट्टाचार्य और गोविन्द निहलानी जैसे फिल्मकारों में देखा जा सकता है।

इप्टा ने अपने को कभी देश-समाज से काट कर संस्कृति को नहीं देखा। इसीलिए इप्टा के राष्ट्रीय महाधिवेशन के लिए जवाहरलाल नेहरू, सरोजनी नायडू जैसी आज़ादी के आंदोलन की नेताओं ने शुभकामना संदेश भेजे।

इप्टा के कलाकार किसी एक भाषा या एक प्रांत या एक संस्कृति के पैरोकार न थे और न आज हैं। इसीलिए उनके नाटकों-गीतों-संगीतों-नृत्यों की लम्बी फेहरिस्त तमिल, तेलुगू, कन्नड़, पंजाबी, मराठी, उर्दू, गुजराती, हिन्दी, बांग्ला, असमिया, उड़िया, मलयालम, गढ़वाली, भोजपुरी, मैथिली, अवधी जैसी ज़बानों में मिल जाएगी।

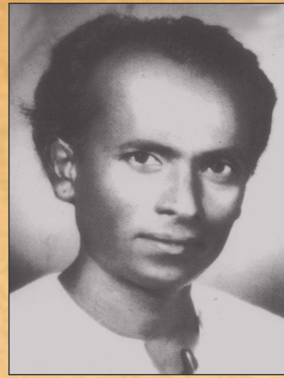


"मेरे लिए कला एक तड़प है, स्पंदन है, जीवन है। मैं चाहता हूँ कि कला जन-जीवन का दर्पण बने जिसमें वह अपने आपको देख सके, सँवार सके, सुन्दर बन सके और उन्नति कर सके। अतः सच्ची कला वह है जो जीवन को सही मायने में चित्रित करे-कला समाज की अवस्था का प्रतिबिम्ब है।"

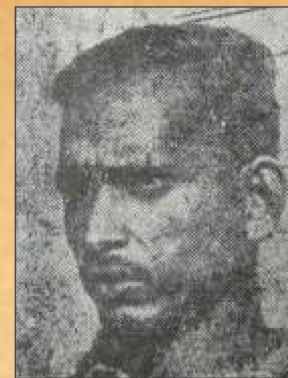
*– प्रख्यात अभिनेता पृथ्वीराज कपूर*



अनिल डीसिल्वा



अन्ना भाऊ साठे



दशरथ लाल



चित्त प्रसाद

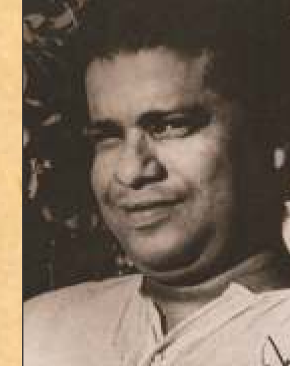


ऋत्विक घटक



शंकर शैलेन्द्र





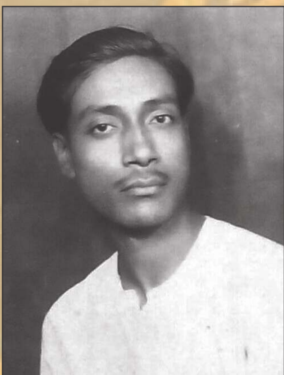
शांति बर्धन



बृजकिशोर प्रसाद



रशीद जहाँ



कन्हैया जी



राजनन्दन राजन



तृप्ति मित्रा



रेखा जैन



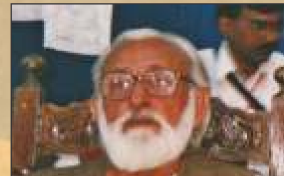
सिस्टर पुष्पा



रवि शंकर



चन्द्रशेखर भारद्वाज



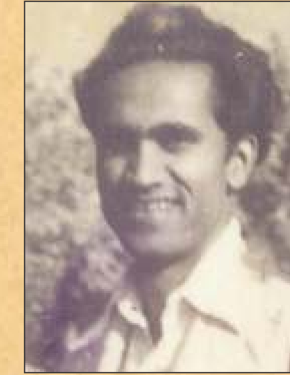
एमएस सथ्यू



शौक़त कैफ़ी आज़मी



राजेन्द्र रघुवंशी



अमर शेख़



उस दौर का हर कलाकार जिसका थोड़ा बहुत भी नाम हो, इप्टा में शामिल था। कलाकार इप्टा की ओर ऐसे खिंचे चले आते थे, जैसे मधुमक्खियाँ शहद की ओर। संगठन में कला के हर क्षेत्र की बड़ी से बड़ी शख़्सीयतें शामिल थीं।

*– ज़ोहरा सहगल मशहूर कलाकार*





*1979: बिहार इप्टा ने प्रेमचंद जन्म शताब्दी के मौके पर उनकी कहानी इस्तीफ़ा का नाट्य मंचन किया। इसमें क़ासिम ख़ुर्शीद और तनवीर अख़्तर मुख्य भूमिका में थे। निर्देशन परवेज़ अख़्तर का था।*

# बिहार में इप्टा आंदोलन

देश में इप्टा के सांस्कृतिक आंदोलन की लहर चली तो उसने हर इलाके को अपने आगोश में ले लिया। बिहार उससे भला अछूता कैसे रहता।

बिहार में इप्टा 1946 के उत्तरार्ध में कल्याण सेन के नेतृत्व में गठित हुआ। 15 अगस्त, 1947 को पटना के रूपक सिनेमा के पीछे कला मंच पर बिहार इप्टा की पहली प्रस्तुति हुई। पटना से विस्तार लेते हुए यह आन्दोलन के रूप में पूरे बिहार में फैला और अपने क्रांतिकारी गीतों, नाटकों के जरिये पूरे देश में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई।

'लाल कनेर, पीर अली, स्पार्टाकस, पोस्टर, मई दिवस, महाभोज, कबिरा खड़ा बजार में, माधवी, सत्य हरिश्चन्द्र, दूर देश की कथा, बिजुलिया भौजी, अमली, सुपनवाँ का सपना, मृदंगिया, बड़े भाई साहब, माहुर, एक और द्रोणाचार्य, बुलंद दरवाज़ा (राशोमन), अंधा युग, बिदेसिया, अपना बिहार, रक्त कल्याण, गबरघिचोर, सवा सेर गेहूँ, मेडेलिन, मुझे कहाँ ले आये हो कोलम्बस, सौदागर, बेटी बेचवा, मैं बिहार हूँ, कोर्ट मार्शल, ख़ुदा हाफ़िज़, जुलूस, भोमा, गबरघिचोरन के माई... आदि नाटकों, रंग संगीत, जनवादी गीतों से एक सशक्त एवं समर्पित संस्कृतिकर्म के रूप में अपनी पहचान स्थापित की।

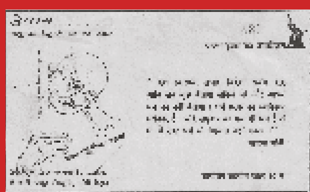
बिहार में इप्टा ने संस्कृतिकर्मियों की एकता और एकजुटता बनाने और कला-संस्कृति से जुड़े सवालों पर संयुक्त आंदोलन में उन्हें उतारने की दिशा में सार्थक प्रयास किए। पटना के साथ ही कई जगहों पर संयुक्त संघर्ष के लिए इप्टा की पहलकदमी पर संयुक्त मोर्चे बनाए गए।

साम्प्रदायिकता के खिलाफ संस्कृतिकर्मियों के राष्ट्रीय कंवेंशन, कलाकार संघर्ष समिति, भारतेन्दु निधन शतवार्षिकी, जातीय हिंसा व विद्वेष के




'दूर देश की कथा' में सामाजिक विसंगतियों का सजीव चित्रण


रक्त कल्याण




बेहतर दुनिया के लिए बुलंद करते रहे आवाज





*1979: इस्तीफा और ईदगाह के मंचन के बाद बिहार इप्टा के महासचिव कन्हैया जी के साथ बृजकिशोर प्रसाद, ललित किशोर सिन्हा, तनवीर अख़्तर, जावेद अख़्तर, बसंत कुमार, पारस, अरशद अहमद, दीप नारायण, परवेज़ अख़्तर, क़ासिम ख़ुर्शीद, रामकृष्ण पाण्डेय, सुमन जोशी, फहीम अशरफ़ ख़ाँ, अमिताभ पाण्डेय व अन्य*

खिलाफ सांस्कृतिक यात्रा, हल्ला बोलः फासिस्ट संस्कृति के खिलाफ जन अभियान, मैं बिहार हूँ: एक जन अभियान, हे राम ... बापू को बिहारी जन का सलाम, आदि ऐसी पहलकदमियाँ हैं, जिसने राज्य में सांस्कृतिक आंदोलन को एक नया आयाम दिया है।

बिहार इप्टा से भी जुड़ने वालों में अलग-अलग क्षेत्र के माहिर लोग शामिल हैं। जैसे- डॉक्टर एसएम घोषाल, डॉक्टर एके सेन, बृज किशोर प्रसाद, रामेश्वर सिंह काश्यप (लोहा सिंह), राधे श्याम सिन्हा, प्रोफेसर रंगीन हाल्दार, पेनु गोपाल, आदित्य भट्ट, भास्कर भट्टाचार्य, अंजलि बोस, कल्याण सेन, पंडित सियाराम तिवारी, विंध्यवासिनी देवी, जाकिर हुसैन, सिस्टर पुष्पा, दशरथ लाल, केसरी नंदन, नचारी झा, प्रोफेसर आरएस शर्मा, अधिक लाल, राजनन्दन सिंह राजन, कन्हैया जी, ललित किशोर सिन्हा, जस्टिस अली अहमद, बजरंग वर्मा, जानकीवल्लभ शास्त्री, सिद्धनाथ कुमार, लतिका चकलानवीस, डीएन सरकार, कुमुद अखौरी, कुमुद चुगानी, श्याम शर्मा, कविता सिंह, राम कृष्ण पाण्डेय, शंकर राव, मृगेन्द्र नारायण सिंह, चंद्रशेखर भारद्वाज, चंद्रशेखर, गौर कुमार गोस्वामी, टीएन शुक्ला, प्रोफेसर विनय कुमार कंठ, नसीम खाँ, डॉक्टर राधारमण नंदी, तपेश्वर लाल विजेता, वसी अहमद, विश्वबंधु, पुष्पा सिन्हा, यतीन्द्र नाथ सिंह, परवेज़ अख़्तर, सुदामा गोस्वामी, अविनाश चन्द्र मिश्र, विनीत कुमार, रश्मि सिन्हा, अवधेश, क़ासिम ख़ुर्शीद, अरविन्द रंजन दास, संजय उपाध्याय, अपूर्वानन्द, आदि सैकड़ों नामों में कुछ नाम हैं।

और समी अहमद, फणीश सिंह, अशोक पाठक, डेज़ी नारायण, बीरेन्द्र नारायण यादव, शकील अहमद खान, सत्यजीत, गौरी मुकुल, ऊषा वर्मा, सीताराम सिंह, तनवीर अख़्तर, फिरोज़ अशरफ़ खाँ, इन्द्रभूषण रमन बमबम, अंजनी कुमार शर्मा, आसिफ़ अहमद, राजन कुमार, सुभाष चन्द्र, संजीव कुमार दीपू, अमित रंजन, लक्ष्मी प्रसाद यादव, आशुतोष मिश्र, नागेन्द्र नाथ पाण्डेय, रितेश कुमार, आलोक कुमार, संजय सिन्हा, दीपक कुमार, पीयूष सिंह जैसे हज़ारों लोगों के ज़रिए यह सिलसिला आज भी जारी है।





*1984: महाभोज, पटना इप्टा की यादगार प्रस्तुतियों में से एक है। मन्नू भंडारी के इस नाटक का निर्देशन परवेज़ अख़्तर ने किया था। भारतीय नृत्य कला मंदिर के मुक्ताकाश मंच हुई इस प्रस्तुति में करीब सौ कलाकारों ने भाग लिया था। इसमें मुख्य रूप से जावेद अख़्तर, पुष्कर सिन्हा, विनीत कुमार, राजेश कुमार, अरविन्द गुप्ता शामिल थे।*

# 75 साल का जवाँ कारवाँ

इप्टा इतिहास नहीं है। इप्टा का इतिहास है। इप्टा की मज़बूत इंक़लाबी विरासत है। उसके वारिस उसके सिलसिले को लगातार आगे बढ़ा रहे हैं। इसलिए यह सिलसिला रुका नहीं है। यह आज भी जारी है। 75 साल में वह और जवाँ कारवाँ बन चुका है।
इप्टा महज़ गीत संगीत नाटक वाला एक और संगठन कभी नहीं रहा। इप्टा के लिए यह सारे संस्कृतिकर्म जनता की ज़िंदगी के सवालों से जुड़े थे और आज भी हैं।

आज़ादी से पहले अगर यह स्वराज का मसला था या या भारत छोड़ो आंदोलन जैसी राष्ट्रीय मुहिम में सक्रिय भागीदारी का या बंगाल के ख़ौफ़नाक अकाल को राष्ट्रीय मुद्दा बनाने का था तो आज़ादी के बाद नए मुल्क के ख़्वाब को जन आवाज़ देने, नफ़रत की राजनीति से उपजे बँटवारे के दर्द को सबका दर्द बनाने का सवाल था।



अस्सी के दशक में पंजाब में आतंकवाद के खिलाफ मशहूर शायर कैफ़ी आज़मी की लीडरशिप में पंजाब संहति उत्सव और जन यात्रा थी या फिर उत्तर प्रदेश में फ़िरकापरस्ती के ख़िलाफ़ पद चिन्ह कबीर यात्रा या नज़ीर यात्रा या बिहार में सम्प्रदायवाद अलगाववाद के ख़िलाफ़ सांस्कृतिक कंवेंशन या क़ौमी एकता के लिए पटना में 17 किलोमीटर की मानव शृंखला , भारतीय संस्कृति की हिफ़ाज़त के लिए फ़ासिस्ट संस्कृति के ख़िलाफ जन सांस्कृतिक अभियान हो या बिहार में अभिव्यक्ति की आज़ादी को काबू में करने वाले प्रेस बिल के खिलाफ आंदोलन, प्रेमचंद रंगशाला को सीआरपीएफ के कब्ज़े से आज़ाद कराने के लिए संघर्ष हो या 80-90 के दशक में कट्टरता और नफ़रत के बरअक्स संविधान के मूल्यों को बचाने की कोशिश हो या गांधी जी की

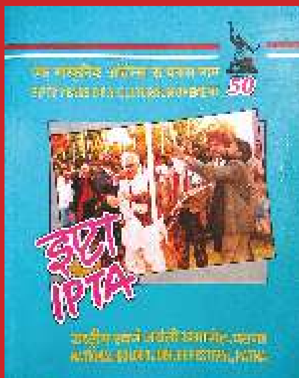


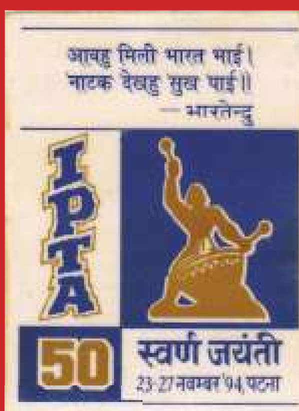




*1989: मशहूर रंगकर्मी सफ़दर हाशमी की हत्या के तुरंत बाद पटना के संस्कृतिकर्मी कलाकार संघर्ष समिति के बैनर तले सबसे पहले सड़क पर उतरे और अपना प्रतिरोध दर्ज कराया।*








शहादत के मौक़े पर नफ़रत, हिंसा, झूठ के ख़िलाफ़, मोहब्बत का पैग़ाम जन जन तक पहुँचाने की कोशिश या फिर पैग़ाम-ए-मोहब्बत जैसा जन अभियान हों या सामाजिक गैरबराबरियों के ख़िलाफ खड़ा होने का मसला या स्त्री विमर्श और मुक्ति के मुद्दे हों या जातीय उत्पीड़न का सवाल या किसान-मज़दूरों के मुद्दे ... ये महज़ चंद कुछ ऐसे उदाहरण हैं जिन्हें इप्टा ने आगे बढ़कर सबसे पहले उठाया।

ये इप्टा के जन सरोकार को बताते हैं। ध्यान रहे इप्टा ये सभी काम नाटक-गीत-संगीत-नृत्य-कला प्रदर्शनी- सांस्कृतिक सेमिनार, सांस्कृतिक अभियानों के ज़रिए करती रही और कर रही है। यानी इप्टा का कर्म जन सांस्कृतिक कर्म था, है और रहेगा। यह धड़कता सांस्कृतिक संगठन है, जिसके दिल में जन संस्कृति का नगाड़ा बजता है। जनता की परेशानियों और उम्मीदों की सांस्कृतिक आवाज़ है।

यहाँ यह बात बहुत अहम है और यह बार बार दोहराना जरूरी है कि इप्टा ने यह सब काम समान विचार वाले अनेक सांस्कृतिक संगठनों/ शख़्सीयतों के साथ मिलकर या संयुक्त मोर्चा बनाकर किया। यानी इप्टा ने अपने को सिर्फ़ एक और संगठन बने रहने की बजाय सांस्कृतिक आंदोलन की अपनी पहचान छोड़ी नहीं।

जन्म से लेकर आज तक इप्टा के चौदह राष्ट्रीय सम्मेलन हो चुके हैं। बीच में राष्ट्रीय स्तर पर सांगठनिक ढाँचा आज जैसा नहीं था। मगर ऐसा नहीं है कि इप्टा की इकाइयाँ नहीं थी। वे काम नहीं कर रही थीं। 1985 में राष्ट्रीय स्तर पर दोबारा संगठन खड़ा हुआ।

आज लगभग पौने दो सौ जिलों में इप्टा की लगभग पाँच सौ इकाइयाँ सक्रिय हैं। ये इकाइयाँ महज़ शहरी नहीं हैं। आज बिहार, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, मणिपुर, मेघालय, असम, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, दिल्ली, राजस्थान, जम्मू-कश्मीर, पंजाब, चंडीगढ, झारखंड, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, मुम्बई, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, जेएनयू, जामिया मिलिया यूनिवर्सिटी में सक्रिय हैं।



एक आंदोलन,
एक परंपरा,
एक विरासत



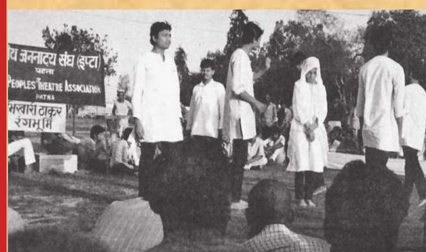
मूछ : विदूषक के चरित्र को नया आयाम





Real entertainment



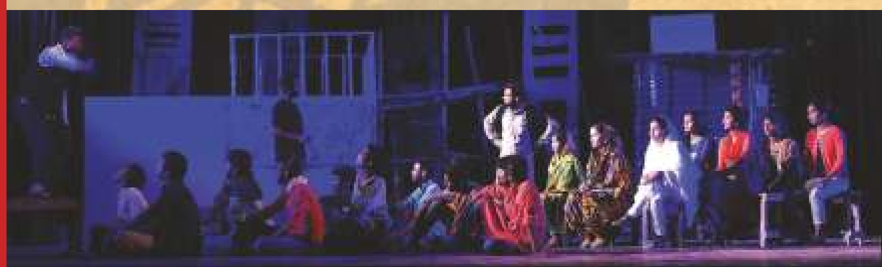














आज यह आवश्यक हो गया है कि कला को फिर उन चौपालों में लाया जाय, जहाँ जिन्दगी के नये-पुराने फूल बिखरे हैं। इसे खलिहानों में और खेत की लहलहाती फसलों के बीच लाया जाय, जहाँ श्रम, शांति और जीवन का सच्चा संगीत गूंजता है। कला को शोषण के चंगुल से निकालने के लिए, कलाकारों को शोषण से बचाने के लिए हमारा यह पहला कर्तव्य हो जाता है कि शोषण के विरुद्ध भरपूर चोट की जाए। ... बल्कि सही तो यह होगा कि जन-जीवन की चेतना और प्रेरणा का प्रतीक होने के नाते जन नाट्य इस लड़ाई में अलग दस्ता बने।

*- ललित किशोर सिन्हा*
*बिहार इप्टा के पूर्व महासचिव*

### प्रस्तावित कार्यक्रम

# इप्टा राष्ट्रीय प्लैटिनम जुबली समारोह
# 26 से 31 अक्टूबर 2018, पटना

*संभावित अतिथि : हम चाहते हैं कि ये सभी लोग बतौर अतिथि समारोह में शामिल हों। हम इनसे सम्पर्क कर रहे हैं। ये हैं:-* चंद्रशेखर कम्बार, प्रोफेसर रोमिला थापर, प्रोफेसर इरफ़ान हबीब, प्रोफेसर प्रभात पटनायक, प्रोफेसर ज्याँ द्रेज, एमएस सथ्यू, शबाना आज़मी, महेश भट्ट, अखिलेन्द्र मिश्रा, अंजन श्रीवास्तव, पंकज त्रिपाठी, स्वरा भास्कर, विनीत कुमार, आशीष विद्यार्थी, राकेश बेदी, वरुण ग्रोवर, प्रकाश राज, जावेद सिद्दिकी, एमके रैना, नादिरा बब्बर, नूर ज़हीर, प्रसन्ना, बंसी कौल, एनके शर्मा, अरविंद गौड़, कीर्ति जैन, उदय प्रकाश, ऋषिकेष सुलभ, राजेश कुमार, अपूर्वानन्द, मनीन्द्र नाथ ठाकुर, अनिल राजिमवाले, गार्गी चक्रवर्ती, तुषार गाँधी, डीएम दिवाकर, राम पुनियानी, शबनम हाशमी,असगर वजाहत, राजेश जोशी, अली जावेद, वीरेन्द्र यादव, तरुण कुमार, अरुण कमल, आलोक धन्वा, अविनाश चन्द्र मिश्रा, संजय उपाध्याय, महेश आनंद, परवेज़ अख़्तर, मलयश्री हाशमी, संजना कपूर, प्रवीर गुहा, रणबीर सिंह, जावेद अख्तर खाँ, नागेन्द्र, शीतल साठे, संभाजी भगत, चारू-विनय, वंदेमातरम् श्रीनिवास, सुधन्वा देशपांडे, आसिफ अली, अमिताभ, नासिरूद्दीन

## इप्टा राष्ट्रीय जन संगीत महोत्सव

विभिन्न राज्यों की इप्टा इकाइयों द्वारा विभिन्न भाषाओं में जनगीतों की प्रस्तुति। शीतल साठे एवं साथियों (पुणे), कबीर कला मंच (देवास), यूथ क्वायर (कोलकाता), मज़दूर किसान शक्ति संगठन (राजस्थान), संभाजी भगत (मुम्बई) द्वारा विशेष प्रस्तुतियाँ।

## इप्टा राष्ट्रीय लोक संगीत एवं नृत्य महोत्सव

विभिन्न राज्यों की इप्टा इकाइयों द्वारा स्थानीय लोक सांस्कृतिक संगीत परंपराओं और लोक नृत्यों की प्रस्तुति।

## इप्टा राष्ट्रीय शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य महोत्सव

विभिन्न राज्यों की इप्टा इकाइयों के द्वारा शास्त्रीय संगीत एवं नृत्यों की प्रस्तुति। शुभा मुद्‌गल (शास्त्रीय गायन), नीलम चौधरी (कथक), सुदीपा (भरतनाट्‌यम) द्वारा विशेष प्रस्तुतियाँ।

## इप्टा राष्ट्रीय नाट्‌य महोत्सव

विभिन्न राज्यों की इप्टा इकाइयों के द्वारा विभिन्न भाषाओं में नाट्‌य प्रस्तुतियाँ। नया थियेटर (रायपुर), एकजुट (मुंबई), अस्मिता (दिल्ली), बहुरूपी (कोलकाता) द्वारा विषेष प्रस्तुतियाँ।

## इप्टा राष्ट्रीय संगोष्ठी, रंग संवाद/ कार्यशालाएँ

जन संस्कृति से जुड़े संगठनों/ शख़्सीयतों का सम्मेलन। रंग तकनीक पर संवाद।

## इप्टा जन सांस्कृतिक मार्च

देश के संस्कृतिकर्मी एवं पटना के नागरिकों द्वारा जन सांस्कृतिक मार्च।



... बतौर एक संगठन हम किसी पार्टी के अंग नहीं हैं, हम अपने देश की जनता का हिस्सा हैं। भारतीय जननाट्य संघ किसी एक संगठन विशेष या राजनीतिक दल विशेष के विचारों का अपनी सांस्कृतिक गतिविधियों के जरिये प्रचार-प्रसार करने का मंच नहीं हो सकता। हालाँकि इप्टा के सदस्य अपनी व्यक्तिगत स्थिति में, कोई भी राजनीतिक विचार रख सकते हैं और कोई भी राजनीतिक कार्य कर सकते हैं, लेकिन इप्टा के सदस्य की हैसियत से उन्हें इप्टा के सिद्धांतों और नियमों का पालन करना पड़ेगा।

*- एनएम जोशी-अध्यक्ष*
*- केए अब्बास-महासचिव*
*(सन् 1946 में इप्टा की ओर से प्रसारित एक अपील)*



## मिल के चलो... यह वक़्त की आवाज़ है

*(इप्टा के लिए लिखे गए और गाए गए चंद मशहूर गीत)*

तू ज़िंदा है तो ज़िंदगी की जीत में यक़ीन कर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
✦ *शंकर शैलेन्द्र* ✦

...

झूम-झूम के नाचो आज, गाओ खुशी के गीत।
झूठ की आख़िर हार हुई, सच की आख़िर जीत।
✦ *प्रेम धवन* ✦

...

हम मेहनतकश, जगवालों से
जब अपना हिस्सा माँगेंगे
इक खेत नहीं, इक देश नहीं
हम सारी दुनिया माँगेंगे
✦ *फ़ैज़ अहमद फ़ैज़* ✦

...

है भरा प्याला अभी पहला कि प्याला दूसरा भी आ गया है
वाह, यह कैसा अनोखा सिलसिला है
फिर नये संघर्ष का न्योता का मिला है
✦ *कविवर कन्हैया* ✦

...

गंगाजी के घाट पर मिला एक इंसान,
मैंने पूछा नाम तो बोला-मैं हूँ हिन्दुस्तान!
कटोरा लिए खड़ा हूँ!!
जोगिरा सा रा रा रा रऽ।
✦ *राजनन्दन सिंह राजन* ✦

...

कैसे जैइबे गे सजनिया पहाड़ तोड़े ला
हमरा अँगुरी से ख़ुनमा के धार बहे ला।
✦ *चन्द्रशेखर भारद्वाज* ✦

आज़ादी ही आज़ादी, बस आज़ादी ही आज़ादी...

**बिहार इप्टा की ओर से इप्टा राष्ट्रीय प्लैटिनम जुबली समारोह, पटना की तैयारी के मौक़े पर सीमित व निजी वितरण के लिए प्रकाशित। सम्पर्क:** तनवीर अख़्तर, भारतीय जन नाट्य संघ, 701-बी, आशियाना चैम्बर्स, एक्जीबिशन रोड, पटना-800001, बिहार।
**मोबाइल:** 9308745797, 9473380033 **ई-मेल:** biharipta47@gmail.com
**आवरण चित्र:** नाटक **नबान्न** (1944) से **गबरघिचोरन के माई** (2018) तक
**परिकल्पना, डिजायन, शोध, चयन:** नासिरूद्दीन